बाजार में आंखों को चौंध रहा 'सुनहरा रंग'

लुभा रहे माता लक्ष्मी के पोस्टर, पूजा सामग्री की खरीदारी के लिए उमड़ी भीड़

प्रतिनिधि/प्रतिदिन अखबार

अमरावती, 20 अक्टूबर- भारतीय संस्कृति में दिवाली यह हिंदु धर्म का सबसे बडा त्योहार माना जाता है. इस त्योहार के महत्व के साथ दीपावली के हर दिन को उनकी परंपरा नुसार मनाने की प्रथा का पालन किया जाता है. इस वर्ष अमावस्या दो दिन में विभाजित होने के कारण कुछ के घर सोमवार तो कुछ के घर मंगलवार, 21 अक्टूबर को दिवाली का पर्व लक्ष्मी पूजन घर-घर में प्रदोष काल में मनाया जायेगा.

हिंदू धर्म में दिवाली के दिन लक्ष्मी पूजा को विशेष महत्व होता है. इसका धार्मिक और आध्यात्मिक महत्व अधिक है. लोग दिवाली के त्यौहार की बडी उत्कंठा के साथ प्रतिक्षा करते हैं, जो हिंदुओं के प्रमुख त्योहारों में से एक है. इस त्यौहार को लोग अपने परिवार, दोस्तों और रिश्तेदारों के साथ मनाते हैं. पूरी श्रद्धा और पवित्रता के साथ भगवान गणेश और देवी लक्ष्मी की पूजा अर्चना करते हैं. इस दिन को बड़ी दिवाली भी कहा जाता है.

लोग अपने घरों के आंगन को रंगोली से सजाकर मोमबत्तियों, फूलों और आकर्षक रोशनी करते है. इस साल कार्तिक माह के कृष्ण पक्ष की 15वीं तिथि को लक्ष्मी पूजन होगा. इस वर्ष अमावस्या 20 अक्टूबर की दोपहर 3.44 बजे से मंगलवार, 21 अक्टूबर की शाम 5.54 बजे तक भले ही रहेगी, लेकिन अधिकांश स्थानों पर मंगलवार, 21 अक्टूबर को लक्ष्मी पूजन किया जायेगा. इस साल लक्ष्मी पूजन का मुहूर्त शाम 7.08 से रात 8.18 बजे तक बताया जा रहा है. साथ ही प्रदोष काल शाम 5.46 से रात 8.18 बजे तक होगा.

कुछ पवित्र वस्तुओं के बिना माता लक्ष्मी की आराधना पूर्ण नहीं हो सकती. इस लक्ष्मी पूजन में भगवान गणेश और देवी लक्ष्मी की नई प्रतिमा, लकड़ी का तख्ता, आरामदायक लाल या पीला रेशमी या सूती कपड़ा, बही-खाता, एक डायरी और कलम, 5 बड़े घी के दीये और पच्चीस छोटे दीये सरसों के तेल से जलाए हुए, 5 छोटे कलश या मिट्टी के बर्तन जिनमें आप खीर और बताशा भर सकते है. 5 प्रकार के फल, भगवान गणेश की पूजा के लिए दूर्वा, कमल का फूल, मिठाइयां, मीठा पान, इलायची, लौंग, सुपारी, कमल गट्टा, गोमती चक्र, गाय का घी, सरसों का तेल या तिल का तेल जैसी वस्तुएं होना आवश्यक होता है.

मात्र 40 रुपये किलों बिक रहे गेंदे के फुल

दशहरे पर बाजार में गेंदे के फुलों की आवक कम रहने से इस दिन 100 रुपये प्रति किलो से गेंदे के फुल बीक रहे थे. लेकिन इस दिवाली गेंदे के फुलों की आवक अचानक बढने से फुलों की कीमत में भी गिरावट आई है. बाजार में गेंदे के केसरी व पीले फुल मात्र 40 से 50 रुपये किलों से बिक रहे थे. कई स्थानों पर दुकानदार द्वारा इन फुलों को 100 रुपये में ढाई किलो की दरों से बेचते दिखाई दिये. विगत दो दिनों से बाजार में आये गेंदे के फुल सभी को आकर्षित करने लगे थे. विशेषकर केसरिया रंग के फुल सभी को लुभा रहे थे.

इस बार आसपास के इलाकों के साथ पडोसी राज्य से भी गेंदे के फुलों की आवक होने से अचानक फुलों की किमत घटने लगी है. शनिवार और रविवार को 80 रुपये किलों से बिकने वाले गेंदे के फुल सोमवार को अचानक 40 से 50 रुपये किलों के दाम से बिकने के कारण लोग भी फुलों की खरीदारी जमकर कर रहे थे. विशेष यह कि जहां शहरी इलाकों में गेंदे के फुल 40 से 50 रुपये थे. वहीं ग्रामीण क्षेत्र में इन फुलों की कीमत मात्र 20 से 25 रुपये किलो रही. गेंदे के पीले फुल केसरी रंग के फुलों से अधिक महंगे होते है. फिर भी यह फुल खरीदने पर दुकानदार 60 फीसदी केसरी तो 40 फीसदी पिले फुल मिक्स कर बेचते दिखाई दिये.

इस कारण फुल विक्रेताओं के पास बने फुलों के तोरण को इस बार ग्राहकों की कम ही डिमांड दिखाई दे रही थी.

50 रुपए प्रति नग तक बिका कमल का फुल

विशेष यह कि दिवाली में माता लक्ष्मी के आसन कमल के फुल को भी विशेष मांग रही. यह फुल 25 से 50-60 रुपये प्रति नग से बिका. बाजार में कुछ ही स्थानों पर यह फुल उपलब्ध रहने से इन फुलों को खोजने के लिए ग्राहकों को काफी मशक्कत करनी पडी.

180 रुपए जोड़ी से बिका झाडु

लक्ष्मी पूजन के दिन पूजा में झाडू रखने का रिवाज होता है. बाजार में सस्ते से सस्ता झाडू भी 50 से 70 रुपए प्रति नग रहा. भाव तोल करने पर उसकी कीमत घट जाती लेकिन एक झाडु कम से कम 40 रुपये में बिक रहा था. अगर झाडु की मजबुती में कुछ बदलाव किये हो जैसे की झाडु की मुठ प्लास्टिक की हो तो वही झाडु 100 रुपये प्रति नग बिक रहा था. अगर एक से अधिक झाडु ले दो इसकी कीमत 150 रुपये जोडी तक रही.

माता के साज सज्जा की सामग्री मात्र 5 रुपए से

सायन्सकोर मैदान, रुक्मिणी नगर, जवाहर गेट मार्ग, गाडगे नगर, पंचवटी चौक परिसर में इस बार फुटपाथ पर लगने वाली दुकानों की संख्या दिनों दिन बढती जा रही है. शहर के प्रमुख मार्ग यातायात के लिए बंद होने से दशहरा में मार्केट के बाहर के इलाकों में ग्राहकों का खरीदारी के लिए रुझान बढा था. इसे देखते हुए इस बार बाहरी इलाकों में दुकानों की भीड पहले के मुकाबले अधिक दिखाई दी. साथ ही ग्राहकों का भी यहां खरीददारी के लिए उत्साह दिखाई दिया. यहां लक्ष्मी के पैरों के छाप मात्र 5 रुपये जोडी से मिल रहे थे. हल्दी कुमकुम के पैकेट, सुगंधीत अत्तर, ओढणी, चौरंग पर डालने का गद्देदार आसन, मां को साज-सज्जा के लिए इस्तेमाल होने वाले साहित्य जैसी कंघी, कुमकुम, चुडियां, बिंदी पैकेट जैसी वस्तुओं के पैकेट बनाकर उसे मात्र 10 रुपये में बेचा जा रहा था. इसके अलावा लाही-बत्तासे के 10 रुपये में पैकेट, 10 रुपये की शेवंती के फुलों की वेणी के अलावा पूजा में इस्तेमाल होने वाले अन्य साहित्य का भी इसमें समावेश रहा. इस बार कुछ पुजा सामग्री जो इन दुकानों में मात्र 5-10 रुपये में मिल रही थी वह इस बार बढकर 20 से 30 रुपये की हो चुकी थी. यानि दोगुना से भी दोगुना दाम ग्राहकों को चुकाना पड रहा था.

बाजार में ग्राहकी बढ़ी

लक्ष्मी पूजन के दिन माता लक्ष्मी को विविध प्रकार के व्यंजनों का भोग लगाया जाता है. इस निमित्त बाजार में खरीदारी के लिए ग्राहकी नजर आ रही थी. विविध वस्तुओं की खरीदारी के साथ बाजार के मिष्ठान्न प्रतिष्ठानों में मिठाईयां खरीदने के लिए भीड उमडी थी. इसके अलावा रंगोली, आकाश दीप की खरीदारी को लेकर भी ग्राहकों में उत्साह देखा गया.

पांच फलों की खरीदारी

लक्ष्मी पूजन में आम तौर पर पांच फलों को रखने की परंपरा है. इस कारण ग्राहकों के साथ फल व्यवसायी भी बाजार में पांच फल 70 रुपये से 100 रुपये के बीच बेच रहे थे. ग्राहकों के लिए लक्ष्मी पूजा का महत्व रहने से ग्राहकों ने भी इन फलों की खुब खरीदारी की.

लक्ष्मी मूर्तियों को नहीं मिल रहे थे ग्राहक

बाजार के कई क्षेत्र जैसे गांधी चौक, इर्विन चौक से मालवीय चौक, पंचवटी चौक जैसे विविध परिसर में माता लक्ष्मी की मिट्टी व प्लैस्टर ऑफ पेरिस की मूर्तियां बिक्री के लिए रखी गई थी. यहां आधे फीट उुचाई की मूर्ति कम से कम 501 रुपये लेकर 651 रुपये तक रही. उससे अधिक उुचाई की मूर्ति की किमत उसके रंग रुप और साज-सज्जा के अनुसार बढती दिखाई दी. इन दिनों में माता लक्ष्मी की मूर्ति 1701 रुपये तक भी उपलब्ध रही. लेकिन इस साल माता की मूर्तियों की खरीदारी का क्रेझ कुछ कम रहा. खास बात यह है कि इस बार आकर्षक साज सज्जावाली मूर्ति की तुलना में अधिक सादगी व सिंपल दिखने वाली मूर्तियों को ग्राहकों द्वारा अधिक पसंद किया जा रहा है.

सुनहरा रंग बना आकर्षण का केंद्र

बाजार में लक्ष्मीपुजन के लिए इस्तेमाल होने वाली माता की फोटो का कई घरों में अधिक महत्व होता है. इस कारण बाजार में इस बार माता की पारंपारिक फोटों के साथ सुनहरे रंग के पोस्टर पर बनी माता की फोटो भी सभी के लिए आकर्षण का केंद्र बनी रही. इसके अलावा रेडिमेड़ रंगोली के साथ दरवाजे की चौखट को सजाने वाली पट्टी भी सुनहरे रंग में नजर आयी. इसके साथ ही माता के पैरों को छाप, व अन्य सजावट की वस्तुएं भी सुनहरे रंग में उपलब्ध रही. जिसे ग्राहकों की ज्यादा पसंदगी मिल रही थी.